57

ISBN : 978-99949-948-3-0

प्रकाशक : महात्मा गांधी संस्थान
मोका, मॉरीशस

मुद्रक : ड्रैगन प्रिंटिंग क. लि.
पोर्ट लुइस, मॉरीशस

© कॉपीराइट : महात्मा गांधी संस्थान

संस्करण : 2018

आवरण चित्र (ब्रह्माणडीय-ध्वनि) : श्रीमती माला चमन-रामयाद

टंकण और पृष्ठ सज्जा : श्रीमती करिश्मा देवी रामझीतन-नारायण
सुश्री दिशा प्रताब
श्रीमती रक्ष लीलोधारी

मूल्य : ४०० रुपए *(Rs. 400)*

**DIASPORA SAHITYA SANGAM**
*(Collection of Creative Writing & Criticism of Diaspora Hindi Literature)*

© Mahatma Gandhi Institute
Moka, Mauritius

मॉरीशस में हि
के पश्चात् भी
प्रांत रही है।

इस महासम्मेल
में एक कड़ी
एवं संपादक
संग्रहित डायस
समीक्षा, निहि

मुझे पूर्ण विश्वा
और श्रेय प्रदा
शुभकामनाएँ

श्रीमती लील
शिक्षा एवं मा
तृतीयक शिक्ष
मॉरीशस

# मॉरीशस की कहानियों में स्त्री जीवन

डॉ. उमेश कुमार सिंह
*मॉरीशस*

मॉरीशस देश की हरी भरी धरती पर लम्बे समय तक रहने का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान यहाँ पर लोगों के जनजीवन को नज़दीक से देखने, परखने और परिचित होने को सौभाग्य की बात कहूं तो अनुचित न होगा। इस शोध पत्र में यहाँ के जन-जीवन पर केन्द्रित कहानियों में स्त्री जीवन की पड़ताल करनी है। यह सौ प्रतिशत तय है कि इस देश में भारत से सर्व प्रथम सन १८३४ में भारतीयों का प्रथम जत्था मॉरीशस आया था। इस दौरान जहाजिया भाई बहनों ने पानी के जहाज़ की अनेकों परेशानियों का सामना करते हुए किसी तरह भारतवासी कुली कामगरों का जत्था आप्रवासी घाट मॉरीशस पहुंचा था। यह वह दौर था जब यहाँ पर आज की तरह रहने के आधुनिक संसाधन उपलब्ध नहीं थे। मॉरीशस पहुँचाने पर बहुत से लोग गोरों की डांट-डपट, बीमारी, और मार्ग की अनेक बाधाओं और शोषण से टूटकर रोने लगते थे। इस बात का जिक्र अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर आदि रचनाकारों के कथा साहित्य में बहुत बारीकी से किया गया है। पहले इस देश के बाशिंदे झोंपड़ीनुमा घरों में रहा करते थे जिन्हें अंग्रेज़ गोरों ने भारत से लाकर कुली के रूप में कार्य करने वाले लोगों के रहने के लिए बनाया था। मॉरीशस के नर-नारियों के जीवन को परिवर्तित करके आधुनिक बनाने में इस देश की सरकार को मात्र 60 वर्ष लगे हैं। ऐसे उदाहरण दुनिया में देखने को शायद बहुत कम मिलते हैं। मॉरीशस दुनिया में एक लघु भारत के रूप में भी जाना जाता है।

मॉरीशस दुनिया के मानचित्र पर आप्रवासियों के खून पसीने की मेहनत से बना एक हरा-भरा प्रजातांत्रिक देश है जिसमें भारतीय, अफ्रीकी, चीनी और अनेक धर्मों को मानने वाले लोग एक साथ मिलकर प्रेम से रहते हैं, जिनकी अपनी भाषा अधिकांशतः क्रियोल और भोजपुरी और संस्कृति भिन्न-भिन्न हैं। रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान आदि भिन्न दिखलाई पड़ता है परन्तु आचार-विचार और सद्भाव के मामले में भारत के समरूप है। यहाँ की शांति और एकता को देखकर लगता है कि यहाँ सही मायने में गंगा जमुनी तहजीब साकार रूप लेकर जीवंत हो रही है।

किसी भी देश के विकास की दौड़ में सर्वप्रथम और सबसे अधिक प्रभावित होने वाली स्त्री ही होती है। भानुमती नागदान के कहानी संग्रह "दरार" और "मिनिस्टर" आदि की कहानियों के माध्यम से स्त्री जीवन के बारे में अपनी बात करने जा रहा हूँ। यह सत्य है कि नागदान की कहानियों में मॉरीशस की स्त्री जीवन की दशा और दिशा को बड़े ही सशक्त और मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है। जिस पर पश्चिम का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है परन्तु इसका तात्पर्य यह बिलकुल नहीं है कि भारत इस विकास से प्रभावित नहीं हुआ है। भारत भी पश्चिमी देशों के विकास की चपेट में आ गया है परन्तु महानगरों के जीवन को छोड़कर वहाँ का ग्रामीण जीवन अभी भी पश्चिमी प्रभाव से अछूता दिखलाई पड़ता है।

भारतीय आर्य नारियाँ सदैव से अपने पति के साथ सात जन्मों के बंधन को स्वीकारती रही हैं। पति हर कदम पर स्त्री की रक्षा करता है और प्रत्येक मुश्किल क्षण में सहायता करता हुआ दिखाई पड़ता है। लेकिन "विधवा स्त्री" कहानी में एक स्त्री पति के बंधन को अस्वीकार करती है और कहती है कि यह कैसा बंधन है, जो मरने के बाद भी जुड़ा रहता है। अपने से, घर से, दीवारों से जुदा हुआ प्यार यह प्यार छोड़ना पड़ेगा। कौशिक तरंग के घर का हाल जानता था, वह सजल से कई बार मिल चुका था। उठो जागो, इस तरह जीना दुखदायी होगा। हर एक को अपनी ज़िंदगी जीनी पड़ती है। यादों के पलों से ज़िंदगी को सजाकर जियो[1] "ज़िंदगी में रुके रहने से मौत नहीं आती। आता है खालीपन, अकेलापन और घोर अन्धकार जो घुटन भरा करता है।[2] इसी प्रकार एक अन्य कहानी में "कहने को तो समाज बदला है किन्तु क्या पुरुष-पति बदला है? नहीं वह तो सदियों से वहीं का वहीं है। औरत को दायरे में रखने वाला। आज औरत माँ, बीवी, बहन के साथ-साथ एक पैसा कमाने की मशीन बन गई है। पैसा कमाकर दो। स्टैण्डर्ड ऑफ़ लिविंग बढ़ाओ और कुछ मत कहो।"[3] यह स्थिति आधुनिक दौर के परिवर्तन के बाद की स्थिति को प्रदर्शित करती है एक वह भी दौर था जब स्त्री अपने पति की याद में और बीते कल के प्रेम के क्षणों को याद करके अपना पूरा जीवन व्यतीत कर दिया करती थी।

यह भी सत्य है कि इस देश के नागरिक आज के भारत से आये पूर्वजों की संतानें हैं जो आज भी भारतीय मूल्यों और धार्मिक आचार-विचार और पूजा-पाठ बड़े विधि-विधान के साथ जीवन यापन किया करते हैं। यहाँ प्रत्येक हिन्दू के घर में मंदिर अवश्य है। इन सब बातों के होने पर भी यहाँ के जन-जीवन में पश्चिम का प्रभाव बहुलता में घुलता हुआ दिखलाई पड़ता है। भारत से मॉरीशस का बहुत गहरा सम्बन्ध है इसलिए भारत की स्थिति के बारे में भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। भारत में लाख बुराइयाँ हों परन्तु उनमें अपने बुजुर्ग माता-पिता के प्रति स्नेह मॉरीशस की तुलना में कुछ अधिक दिखलाई पड़ता है। परन्तु यहाँ की कहानियों में इसका ज़िक्र बड़ी बेबाकी के साथ किया गया है। सौ "साल की सालगिरह" में अपने बुज़ुर्गों के प्रति प्रेम के बारे में इसका उदाहरण देख सकते हैं। जब सौ वर्ष की स्त्री की सालगिरह मनाते हैं और उन्हें इस अवसर पर सम्मानित किया जाता है। उस समय एक पत्रकार तुलसी से प्रश्न करता है: आपकी ज़िंदगी में क्या तमन्ना है इस पर आप क्या कहेंगी? "तुलसी ने कहा बेटा! यदि दे सको तो आज इसी समय मुझे मौत दे दो, आज मैं खूब साफ़ हूँ, महकी हुई हूँ आज के पल जी लेने के बाद मुझे फिर उस गन्दी ज़िंदगी में मत धकेलो, जहाँ पर बासी खाना, मैला कमरा, मैले कपड़े और गाली, ताने-बाने हों। मैं लोगों के चेहरे देखने को तरस जाती हूँ, दो मीठे बोल सुनने को तरस जाती हूँ"[4] भानुमती नागदान एक सशक्त लेखिका हैं जिन्होंने यहाँ की ज़िंदगी में हो रहे बदलावों के हर एक क्षण को बारीकी से देखा और परखा है।

नागदान अपनी कहानियों में प्रेम का एक और अलग रूप प्रस्तुत करती हैं। "प्रशांत और मेरे बीच कभी प्रेम नाम की कोई वस्तु ही नहीं थी... हमारे बीच कभी प्यार के तत्त्व ही नहीं विकसित हुए। कामाचार की स्वाधीनता होते हुए भी प्रेम का तथा समझौते का अभाव था।"[6] इसी कहानी में स्त्री का दूसरा रूप देख सकते हैं। इसके बावजूद वे इनसानी जिस्म की भूख का हवाला देती हुई कहती हैं, "इन्सान के दिल से

[illegible] जिस्मानी भूख [illegible] दिल की मजबूती भी आ जाती है।

[illegible] अपने को धिक्कारती थी, नफ़रत की आग में झुलसती रहती।"[7] यह स्त्री के रोते हुए दिल का बयान है तथा तीसरा रूप क्या नारी सिर्फ़ जिस्मानी भूख मिटाने के लिए है, क्या वह मान मर्यादा तथा प्यार की हकदार नहीं? अंत में[8] "कृष्ण और सुदामा की दोस्ती कितनी अच्छी तथा मनोहारी थी, एक दूसरे के प्रति कितने श्रद्धालु तथा विवेकी थे। दोनों के प्रेम की तथा अनुराग की उपमाएं आज तक दी जाती हैं। जब गरीब सुदामा कृष्ण से मिलने गए तो कृष्ण ने दौड़कर उसको गले लगाया और आदर भाव के साथ अपने पास बिठाया।"[9] इस प्रकार स्त्री के प्रेम की इन तीनों विपरीत स्थितियों पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार प्रेम, जिस्मानी भूख और मित्रता के इस मायाजाल में विरोधाभास-सा दिखलाई पड़ता है तथा इन तीनों स्थितियों में सम्बन्ध, प्रेम और सहभागिता का अभाव स्पष्ट देखा जा सकता है परन्तु दूसरी ओर यह कहानी स्त्री जीवन के कच्चे सच को उद्घाटित ही नहीं करती है बल्कि स्त्री पुरुष के प्रेम की बखिया उधेड़ देती है।

*'थोड़ा रूमानी हो जाएँ'* कहानी में बदलते हुए मूल्य, परिवेश और सोच पर सीधा व्यंग्य किया गया है। "प्रभा मेरी बात गौर से सुनो! तुम किसी दोस्त को नहीं अपना सकती। हमारा समाज अभी तक रूढ़िग्रस्त है, पुराने विचारों में जकड़ा हुआ है। स्त्री और पुरुष के बीच की दोस्ती के सम्बन्ध नहीं समझ पायेगा और स्वीकारेगा भी नहीं। सालों लग जाएँगे इस ज़िंदगी को अपनाने में। चाहे वह कितना पवित्र क्यों न हो और प्लातोनिक क्यों न हो मेरी तो यह राय है।" यह एक विधवा के अकेलेपन की कहानी है जो अपने अकेलेपन से निरंतर जूझती रहती है। वह अपने जीवन में एक मित्र चाहती है जिससे बात कर सके। एक स्त्री अपने विधवा जीवन के अकेलेपन को मिटाना चाहती है। वह विधवा जीवन नहीं बल्कि सधवा जीवन जीने की लालसा रखती है।[10]

स्त्री सदैव अपने स्वाभिमान के साथ जीने का प्रयास करती है लेकिन उसकी परिस्थितियाँ उसे विपरीत दिशा में जीने को विवश करती हैं। हम इस बात को इन उदाहरणों के माध्यम से पुष्ट कर सकते हैं। "आखिर कौन सी कमी थी, आज के पुरुषों में जो नारी को विवश करते हैं, पराये पुरुष का दामन थामने के लिए। नारियां अपने आप से तंग आकर, ज़िंदगी से निराश और प्यार से वंचित होकर यह कदम उठाती होंगी।" [10]स्त्री जीवन की त्रासदी है इसको वह कैसे व्यक्त करे कि उसका भी अपना मन, विचार और इच्छाएँ एक अन्य कहानी के होती हैं इस उदाहरण के आधार पर समझ सकते हैं। "मैं कैसे उन्हें समझती कि मन की एक अलग दुनिया होती है। विवाह विधि की पवित्र अग्नि, मंत्रोच्चारण और अर्थहीन रस्में उन्हें नहीं बदल सकती।" [11] इसी प्रकार एक अन्य साक्ष्य में "तुम उन पुरुषों में से हो जो पत्नी को खाना खाने वाली मशीन, कपड़ा पहनने वाली सेक्स की गुड़िया समझते हो। थोड़े से प्यार के लिए मैं तरस जाती हूँ।" [12] आज के दौर में स्त्री और पुरुष आपस में बराबर के व्यवहार के हकदार हैं और इतना ही नहीं वे प्रेम करने और प्रेम पाने के लिए, निर्णय करने का बराबर का अधिकार रखते हैं। इस विपरीत स्थिति में स्त्री कब तक चुप रहकर पीड़ा सहती रहेगी और अपना मुंह नहीं खोलेगी।

मेरी दृष्टि में 'लहू का घूँट' कहानी बहुत महत्वपूर्ण है। इस कहानी में अपने वतन की याद और अपनों की याद के साथ-साथ मॉरीशस में गोरों के शोषण की ओर संकेत किया गया है; गोरे स्त्रियों का किस प्रकार शोषण करते हैं! स्त्रियाँ मन से सरल और स्वभाव से बहुत सीधी होती हैं जो शोषण का प्रतिकार करती हुई दिखलाई तो पड़ती हैं। परन्तु जब उनके संकर बच्चे पैदा होने लगते हैं इस भयंकर पीड़ा को गिरिमिटिया समाज की भयंकर और असह्य पीड़ा न कहें तो और क्या कहें। " घर में बच्चे नीली आँखों वाले पैदा हो रहे हैं का गम लिए घर का एक बुजुर्ग मर जाता है। " [13]

भारत के परिवारों की सभी विशेषताएँ मॉरीशस के परिवारों में शत-प्रतिशत दिखलाई पड़ती हैं जिसका वर्णन हमें "दरार" कहानी में देखने को मिलता है। "घर जिसे हमारी संस्कृति में मंदिर माना जाता है, घर माँ और ममता का प्रतीक होता है, जहाँ पर अपनों का बसेरा होता है, प्रेम-प्यार और आदर भाव का सम्मान होता है। जहाँ पर पूजा –पाठ, देवी-देवताओं की आराधना की जाती है, आँगन में तुलसी की क्यारी होती है। हनुमान जी की झंडियाँ हवा में फहराती हैं। घर जहाँ पर दुःख-सुख, हंसी-ख़ुशी और आँसू का संगम होता है। छोटे बड़ों का मेल होता है। एक दूसरे की मान मर्यादा का ख्याल रखा जाता है। सब घर के सदस्य दुःख-सुख के साथ होते हैं।" [15] इस प्रकार देखा जा सकता है कि एक स्त्री की चाहत बहुत छोटी सी होती है वह सदैव अपनी छोटी-सी दुनिया में खुश रहती है। उसकी चाहत के अंतर्गत अपने पति और अपने परिवार की खुशियों से अधिक, न कभी उसने कभी माँगा है और न उससे कभी कम मांगती है।

भारतीय संस्कारों में पली बढ़ी मॉरीशस की स्त्री के विचारों को इस उदाहरण के द्वारा देख सकते हैं, "जब एक सुहागिन स्त्री का पति उसके रहते हुए दूसरी स्त्री रोजा से शादी करता है। तब एक पतिव्रता स्त्री की दुनिया ही उजाड़ जाती है। तब घर के लोग इस परिस्थिति से निकलने के उसे अलग-अलग निवारण बतलाते हैं। माँ कहती है। यह सब कुछ होता ही रहता है तुम संतोषी माँ का व्रत करो। भाई ने कहा अपने पैरों पर खड़ी हो। अपनी प्राब्लम खुद सोल्व करो, भाभी ने कहा मैं तो तलाक ले लेती, मेरी सहेली ने कहा तुम उसे सबक सिखाओ, मेरे दोस्त ने कहा तुम जवान हो, सुन्दर हो नई ज़िंदगी शुरू करो।, पंडित जी ने कहा – ग्रह है। उपाय करना पड़ेगा, मैं क्या करूं।" [14] परन्तु इन सब के बावजूद उस स्त्री का निर्णय मॉरीशसीय साहित्य में ही नहीं बल्कि भारतीय साहित्य में भी बेजोड़ कहा जा सकता है। "पति के साथ मेरा सम्बन्ध परिवार से है, बच्चों से है, रिश्तेदारों से है, कुल देवी देवताओं से है, समाज से है, क़ानून से है। तो क्या मैं यह सब छोड़ दूं।" [15] इसके बाद में वह स्त्री अंत में निर्णय लेती है कि "मैं दान की पत्नी बनकर न सही , इस घर की सदस्य बनकर तो जी सकती हूँ। मैं बच्चों की माँ हूँ, हक़ है मेरा। मैं पचास साल की भद्र महिला हूँ। मुझे इज्जत चाहिए। मैं खानदानी हूँ। दान को जो भी फैसला करना है देखा जाएगा, मेरे बारे में मैं हूँ, मैं रहूँगी अपनी मर्यादा के साथ। " [16] यह भारतीय पतिव्रता नारी का अद्भुत उदाहरण है जो अपने परिवार को टूटने से बचाने के लिए स्वयं संकल्प लेती है।

अंत में, मुझे कहने में संकोच नहीं है कि किसी भी देश के लेखकों में उस देश काल परिस्थिति की छाप होती है। भानुमती नागदान मॉरीशस की एक सशक्त कहानीकार हैं इनकी कहानियों में इस देश की स्त्री के जीवन में आने वाले बदलाव, परेशानियों, और पश्चिमी प्रभाव से समाज में उत्पन्न हो रहे बदलाव को स्पष्ट

रूप से देखा जा सकता है। यह सत्य है कि समाज में निरंतर बदलाव हो रहे हैं मूल्य बदल रहे हैं, उनके जीवन यापन के तौर तरीके बदल रहे हैं। इनके द्वारा लिखी गई अधिकांश कहानियों में अस्मिता के नए स्वरों का आगाज हुआ है तथा सामाजिक जीवन में निरंतर हो रहे बदलावों और जीवन की त्रासद विडम्बनाओं को बड़ी बारीकी और बेबाकी से व्यक्त करती हैं तथा इन कहानियों में निजता के नितांत अलक्षित कोने को स्पर्श करती हुई समाज के सुदूर कोने तक जाती ही नहीं हैं बल्कि बहुत कुछ उजागर भी करती हैं।

**सन्दर्भ सूची**


- यह एक विधवा स्त्री के जीवन की कहानी है। विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ ११४,
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "दरार", कहानी "नया उगता सूरज" पृष्ठ -११३
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "दरार", "आधुनिक नारी", पृष्ठ-७८
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "दरार", सौ साल की सालगिरह, पृष्ठ -६8
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "दरार", "दरार", पृष्ठ -३२
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "मिनिस्टर", दोस्ती , पृष्ठ -३0
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "मिनिस्टर", मिनिस्टर, पृष्ठ -३0
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "मिनिस्टर", दोस्ती , पृष्ठ -३4
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "मिनिस्टर", दोस्ती , पृष्ठ -३१
- भानुमती नागदान "थोड़ा रूमानी हो जाए" कहानी पृष्ठ ११०
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "मिनिस्टर", दोस्ती , पृष्ठ -३4
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "मिनिस्टर", अनुबंधन, पृष्ठ -61
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "मिनिस्टर", दोस्ती , पृष्ठ -३4
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "दरार", लहू का घूँट, पृष्ठ -62
- भानुमती नागदान "थोड़ा रूमानी हो जाएँ" कहानी पृष्ठ ११०
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "दरार", "दरार", पृष्ठ -४१
- भानुमती नागदान, कहानी संग्रह "दरार", पृष्ठ -४१

1.1k
Shares

Your Money Invested
It's easy to find ways to invest money with Yahoo Search! Start for free today

84

# कविता संग्रह – अपनी-अपनी मंज़िलें (सुरीति रघुनन्दन)

By **Editor** - May 16, 2018

"अपनी-अपनी मंज़िलें" कविता संग्रह जीवन का सच्चा दर्पण

मॉरीशस में दो वर्ष की कालावधि में यहाँ के अनेक पर्यटक स्थलों का भ्रमण करने, सागर तटों पर घंटों बैठकर उसके नीले रंग की फेनिल लहरों की सुन्दर छवि को निहारने के साथ-साथ देश के अनेक हिंदी लेखकों से मिलकर उनकी रचनाएं सुनने तथा उनकी रचनाओं को पढ़ने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है.

इसी दौरान एक दिन साहित्यिक व्याख्यान में इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र फीनिक्स में डॉ. सुरीति रघुनन्दन से भेंट हुई. वे मॉरीशस की बहुत प्रतिष्ठित लेखिका हैं. उनका कविता संग्रह "अपनी – अपनी मंजिलें" वर्ष 2017 के अंत में प्रकाशित उनकी प्रथम रचना है. इस कविता – संग्रह में उनकी कुल 42 कविताएं संगृहित की गई हैं. इस संग्रह में कुल पृष्ठ संख्या 96 और इस पुस्तक का मूल्य 275/- रु. है. इस संग्रह को अमृत प्रकाशन शाहदरा दिल्ली से प्रकाशित किया गया है. लेखिका एक दशक से अधिक समय से मॉरीशस तथा भारत में आयोजित अनेक काव्य गोष्ठियों में अपनी कविताओं का काव्य पाठ करती रही हैं. इनकी कविताओं में देश के चौरंगे झंडे की अनुपम छटा तथा कविताओं में जीवन के इन्द्रधनुषी रंगों की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है.

लेखिका की कविताओं में उनकी जन्म भूमि भारत की बहुत सी पुरानी यादों की बानगी मिलती है जिन्हें डॉ सुरीति ने अपने अंतर्मन के किसी कोने में संजोकर रखा था. उन्होंने उसे कागज पर उतारते हुए अपनी कविताओं में व्यक्त किया हैं उनको अपने शहर की यादें उन्हें रह-रहकर सताती रहती हैं.

**"ऐ मेरे शहर/ वो तू है/ तू खड़ा है वहीं का वहीं /मेरे क्षण तेरे आस-पास बीतते हैं."**

उनकी कविताओं में जहां एक ओर कर्मभूमि मॉरीशस के प्रति लगाव दिखाई देता है परन्तु उनका अपनी जन्मभूमि भारत के प्रति भी प्रेम कम नहीं है. मॉरीशस को लघु भारत ही कहा जाता है क्योंकि मॉरीशस के पूर्वज भारत से ही तो आये थे. यहाँ पर रहने वाले बहुतायत में भारत से काम की तलाश में आए गिरिमिटिया आप्रवासी भारतीयों की संतानें ही हैं जो भारत लौटने का सपना देखते-देखते यही पर बस गए और अंत में उन्होंने इस देश को अपने खून पसीने से सींचकर हरित देश बनाने में अपना सर्वस्व निछावर कर दिया. .

**"मातृभूमि से प्रेम नैसर्गिक है / कर्मभूमि से प्रेम अवर्णनीय है/**

**सभी का सहयोग, प्रेम,** आशीर्वाद **/ तिरंगा चौरंगा दोनों वन्दनीय हैं."**

डॉ. सुरीति की कविताओं में स्त्री जीवन का आशावादी मजबूत स्वर, सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ उभर कर आया है. यह सब लेखिका की कड़ी मेहनत, संघर्ष और सकारात्मक सोच के साथ आगे निरंतर बढ़ते रहने की उनकी अपनी जिजीविषा हैं. कवियित्री आधुनिक नारी है जिसे पुरुष की दासता की जंजीरों के बंधन स्वीकार नहीं हैं. वह इस दुनिया में अपनी शर्तों पर जीने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं. वह स्वयं के संघर्षों के बल पर अपनी जमीन पर खड़ी होकर उड़ना और आकाश छूने का हौसला रखती हैं वह इसीलिए कहती हैं.

**"न हारी हूँ न हारूँगी".**

यह आधुनिक कवयित्री इस दुनिया में अपने कदमों के निशान अपने बल पर छोड़कर जाने की इच्छा रखती है.

**"जीवन पथ पर बढ़ती जा रही हूँ / इस उम्मीद के साथ कि /**

**मंजिलें मिलें न मिले / रास्तों पर मेरे कुछ / पद चिन्ह अवश्य रहेंगे."**

इनकी कविताओं में अपने कर्तव्य पथ पर चलने, बढ़ने और रहने के संकल्प को साथ लेकर और कभी न थकने के प्रण को फलीभूत करने के लिए निरंतर अपने पथ पर अग्रसर होते रहने की बात करती हैं.

**"अंतिम सांस तक सामना करूंगी / रुकना मेरा चरित्र नहीं /**

**चलूंगी, बढ़ूंगी, ना कभी थकूंगी/"**

एक स्त्री पत्नी बनकर घर गृहस्ती को चलाने के लिए घर में अपना सब कुछ दाव पर लगा देती है इस दौरान स्त्री घर की पारावार रहित क्रूर हिंसा की हद तक को बर्दाश्त करती है. इस दर्दनाक पीड़ा से उसके शरीर पर उभरने वाले लाल और नीले, निशानों को अपने श्रृंगार से ढककर अपने परिवार की नौका को चलाने का अथक प्रयास करती है, यह सही मायने में भारतीय मूल्यों में पली बढ़ी स्त्री का असली रूप परिलक्षित होता है.

**लाल, नीले, पीले, हरे रंग थे चोट के / चहरे पर पुते मेक-अप की पररतों के नीचे /**

**क्या बताएं ? और क्या छिपाएं ?**

डॉ. सुरीति दुखों से कभी घबराती नहीं है बल्कि वे इन सुख - दुःख को दो सगे भाइयों की तरह अपने जीवन का अंग मानती हैं जो कभी साथ नहीं रहते हैं. परन्तु एक के आते ही दूसरा तुरंत वहां से प्रस्थान कर जाता है.

**"सुख दुःख हैं दो भाई, पर एक साथ चलते नहीं**

**एक आता है तो दूसरा चला जाता है, सहजता समभाव ही जीवन का मूल मन्त्र है"**

लेखिका इस बदलती हुई दुनिया के लोगों के व्यवहार से बखूबी परिचित है इसीलिए इस संसार के बुजुर्गों के प्रति उनके हृदय में अथाह सहानुभूति और प्रेम भरा हुआ है वे बुजुर्गों को अपनी कविताओं में पूर्णरूपेण स्थान देती हैं तथा अपनी कविता के माध्यम से बुढ़ापे से गुजर रहे लोगों को आगाह करती हुई चलती हैं कि बुढ़ापा गुजारने के लिए अति आवश्यक जमा पूँजी को अपने साथ में रखना जरूरी होता है क्योंकि हाथ में पैसा न होने पर अर्थात हाथ खाली होने पर बुढ़ापा बोझ में तब्दील हो जाता है. ऐसी स्थिति में जीवन रसहीन लगने लगता है.

**"बुढ़ापे में न फ़ैलाने पड़ें हाथ / अपनी खातिर जमा पूँजी रखना साथ."**

लेखिका अपने इस संग्रह की कई कविताओं में माँ को, मातृ शक्ति को और ममत्व की शक्ति को बहुत अहम मानती है क्योंकि दुनिया का कोई भी बड़ा विद्वान विचारक, नेता, अभिनेता और साधारण व्यक्ति माँ के गर्भ में नौ महीने विश्राम के बाद ही बाहर आता है. वह तमाम ऊम्र अपनी माँ के कर्ज से उऋण नहीं हो सकता है. इसीलिए उनका माँ के ऋण से ऋणी मन माँ की तारीफ करते नहीं थकता है.

**"माँ किस मिट्टी की बनी होती हो तुम ? / क्या आवश्यकता है द्वार पर,**

**नीबू मिर्च लटकाने की / माँ का आशीर्वाद और दुआओं का**

**कारवां चलता हो जिसके साथ / तीर तलवार और बुरी नजर के खंजर भी ,**

**बेअसर हो जाते हैं. / माँ का कवच भेदने की शक्ति किसी में नहीं है."**

कवयित्री जीवन को गणित के प्रश्नों को हल करने के गुणा एवं भाग की तरह देखती हैं जहां पर परिणाम में घटत बढ़त होने की उम्मीद नगण्य हो क्योंकि जीवन भी गणित के सवाल की तरह होता है जिसमें कोई कड़वी बात कहकर, किसी को आहात कर देना अथवा जीवन में भूल नहीं बल्कि भयंकर भूलें करते रहना आदि के सभी परिणाम इसी दुनिया में भुगतने होते हैं. इसलिए गलतियों से निरंतर बचकर गणित के सवालों की तरह चलते रहना ही सार्थक जीवन जिया जा सकता है.

**"जीवन गणित सा है,/ गणित के प्रत्येक प्रश्न का**

**कुछ लम्बे और कुछ छोटे चरणों के बाद / हल मिलाना, ध्रुव सत्य होता है/**

**प्रत्येक समस्या का समाधान मिलता है / कभी शीघ्र, तो कभी विलम्ब से."**

लेखिका सुदामा और श्री कृष्ण की – सी दोस्ती जैसे समाज की कामना करती है जिसमें छोटे-बड़े का भेद न हो बल्कि सदैव प्रेम और प्रेम की गंगा का प्रवाह, प्रवाहमान और फलीभूत होते रहने की कामना करती हुई अग्रसर होती हैं तथा वह श्री राम कथा की तरह हर युग और समय में इसी तरह की मित्रता चलती रहने की आशा करती है.

**"सुदामा सी दोस्ती को / राम कथा सी आयु प्राप्त हो."**

लेखिका इस संसार को सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर होते हुए देखने के लिए प्रीति और प्रेम के दीये जलना चाहती है.

**"दिए बिन प्रीति के दिए नहीं जला करते हैं / संबंध बिन प्यार के अक्सर खला करते हैं /**

**मुद्दत से वीरान थी मेरी आँखों की बस्ती / इसमें तेरे हजारों ख़्वाब पला करते हैं."**

इस कविता के माध्यम से लेखिका आगे निकलने की चाहत रखती है, उड़ान भरना चाहती है परन्तु जमीन पर रहकर ही आसमान की बुलंदियों तक पहुँचाने का हौसला रखती है.

**"चाहत बस इतनी है तुम प्रेम का प्रमाण बनो / लहरों में जीवन की कुछ सैलाब चाहती हूँ**

**मुझको इल्म है तुम्हारी चाहत का मगर/ तुमसे हकीकत के कुछ गुलाब चाहती हूँ."**

लेखिका जीवन को यथा संभव सरल बनाने की हिमायत करती है तथा सदैव सरल पथ का अनुगमन करने की पक्षधरता का समर्थन करती हुई प्रतीत होती है.

**"लोगों के व्यंग को / दिलों पर न ले /**

**प्रेम और परोपकार का / छौंक लगाकर / जीवन को सुख का निवास बना दे."**

अंत में "अपनी – अपनी मंजिलें" संग्रह की कविताओं को साहित्य की दृष्टि से परखने और कसौटी पर कसने के बाद निः संकोच कहा जा सकता है कि लेखिका अपने कविता – संग्रह की कविताओं में एक स्त्री के रूप में स्वयं उपस्थित ही नहीं रहती है बल्कि स्त्री प्रतिकूल परिस्थितियों और तमाम प्रवंचनाओं के बावजूद पलायन करने से सदैव बचने का प्रयास करती है. यह इस दुनिया का सबसे बड़ा ध्रुव सत्य है कि स्त्री अपने बड़े से बड़े दर्द को सहकर भी उसे दूसरों के समक्ष कभी उजागर नहीं करती है और उसका हल अपने बल पर तलाशने का प्रयास करती रही है, करती रहेगी. स्त्री सदैव से अपने दर्द को व्यक्त करने से परहेज करने के साथ – साथ अपनी असफलताओं, विफलताओं को ढांकने के लिए सदैव प्रयासरत रहती आई है, इस बात से इनकार नहीं

किया जा सकता है. इस प्रकार के अनगिनत संकेत इन तमाम कविताओं में देखने को मिलते हैं. इस संग्रह की अधिकांशतः कविताओं ने संवेदना के गहरे धरातल को स्पर्श किया है इसलिए मुझे आशा है हिंदी साहित्य तथा डायस्फोरा साहित्य जगत द्वारा इस कृति का स्वागत किया जाएगा.

डॉ उमेश कुमार सिंह,

हिंदी चेयर, हिंदी विभाग, भारतीय भाषा अध्ययन संकाय, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका,रिपब्लिक ऑफ़ मॉरीशस, मॉरीशस. ई-मेल: umesh_jnu@rediffmail.com दूरभाष: +230-57022776, +91-9423307797 (India)

Editor

हिंदी बोलिए

# पंकज

## ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन विशेषांक–2018

हिंदी पढ़िए

हिंदी प्रचारिणी सभा का साहित्यिक प्रकाशन

*" भाषा गई तो संस्कृति गई "*

हिंदी लिखिए

"PANKAJ" A Literary Magazine: ISSN 1694-3503
*Published by – HINDI PRACHARINI SABHA, LONG MOUNTAIN - MAURITIUS*

# भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में बोली जाने वाली हिंदी

- प्रो. उमेश कुमार सिंह

मॉरीशस में अपने प्रवास के दौरान मुझे इस देश के अनेक पर्यटक स्थलों का भ्रमण और मन मोह लेनेवाले सागर-तटों पर घंटों बैठकर उसके जल की नीले रंग की आभा से युक्त उठती और गिरती फेनिल लहरों की सुन्दर छवि को निहारने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है। इतना ही नहीं इस देश के अनेक गिरमिटिया प्रवासी हिंदी रचनाकारों से मिलकर उनकी रचनाएं सुनने, उनकी रचनाओं को पढ़ने का अवसर मिला है। इन लेखकों की रचनाओं में कभी भारत से रोज़ी-रोटी की तलाश में आये, बेबस और मजबूर पूर्वजों की पीड़ा को अपने मॉरीशस प्रवास के दौरान रहते हुए, स्वयं महसूस किया है। अपनों की यादें और अपने देश की यादें किस तरह प्रतिदिन, प्रतिक्षण और प्रतिपल निरंतर पीड़ा से सालती रहती हैं। इस शोध पत्र में आप्रवासी गिरमिटिया देशों की हिंदी के प्रयोग और उसके विभिन्न रूपों के बारे में विचार किया गया है।

प्रो. उमेश कुमार सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ । अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से एम. ए. (हिंदी) तथा एम. फिल और पी-एच-डी की उपाधियाँ जवाहर-लाल नेहरू यूनिर्सिटी,नई दिल्ली से प्राप्त की हैं। आप हिंदी और तुलनात्मक साहित्य अध्ययन विभाग, साहित्य विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में स्थायी रूप से पिछले अनेक वर्षों से हिंदी-अध्यापन कार्य से जुड़े हुए हैं, इसके अतिरिक्त प्रतिनियुक्ति पर अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर हिंदी और तुलनात्मक साहित्य विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल में हिंदी अध्यापन कार्य कर चुके हैं । हिंदी की अनेक स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ के साथ-साथ अनेक कथा-आलेख प्रकाशित हो चुके हैं।

भारत में रहनेवाली हमारी युवा पीढ़ी दस बीस बरस गुज़र जाने के बाद अपने पुरखों के नाम तक को भूल जाती है। इतना ही नहीं, हम भारतवासी एक ओर, अपनी स्थानीय बोलियों को भी भूल रहे हैं, वही प्रवासी भारतीय कई पीढ़ियाँ गुज़रने के बाद भी हिंदी को नहीं भूले हैं। प्रवासी भारतीय लेखक हज़ारों मील दूर से आज भी भारत की मिट्टी की सोंधी खुशबू को महसूस करते हैं तथा अपनी सरनामी हिन्दी, अपनी भोजपुरी मिश्रित हिंदी और हिंदी भाषा का गर्व के साथ प्रयोग करते हैं। वे कई दशकों के बाद भी कुछ बदलाव के साथ भोजपुरी को अपने रीति-रिवाज़ों में, संस्कारों में, अपने विचार-विमर्श में आज भी सहेजे हुए हैं। भारत के प्रवास के कारण पीछे छूट गई सुख-दुख में सनी बीती यादों के सहारे, हिंदी में साहित्य का सृजन कर रहे हैं। उन्होंने दिलों को पिघला देनेवाली पीड़ा से सराबोर कविता, कहानियों की रचना की है, जिनमें एक ही भाव, एक ही दर्द, एक ही संगीत सुनाई देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह हमारी अपनी कहानी है। हमारी अपनी बात है। आज भारत के आलावा विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार दो रूपों में हो रहा है। प्रथम के अंतर्गत वे देश आते हैं जहाँ के लोग स्वयं हिंदी को सीखते और पढ़ते हैं। इसके अंतर्गत रूस, चीन, जापान, इंग्लेंड, कोरिया, रोमानिया, इटली, जर्मनी, फ्रांस, कनाडा, नॉर्वे, स्वीडन, पोलेंड, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, मेक्सिको, अफगानिस्तान, आर्मेनिया, अजिरबैजान, तुर्की,

तुर्केकिस्तान, बेल्जियम, बुल्गारिया, क्रोएशिया, हंगरी, स्लोवेनिया, स्पेन, आदि देश आते हैं।

दूसरे देशों के अंतर्गत प्रवासी भारतीय और भारतवंशी लोग बड़ी संख्या में निवास करते हैं, जिनकी मातृभाषा हिंदी है, जो आजकल फ़िजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद एंड टुबैगो, मॉरीशस, थाईलैंड, नैपाल, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका आदि। इन दोनों प्रकार के देशों में हिंदी का रचना-संसार विपुल एवं समृद्ध है।

गिरमिटिया देशों की हिंदी पर अपनी बात रखने से पूर्व में इस बात पर बल देना चाहूंगा कि किसी भी भाषा के सभी रूप कभी भी एक समान नहीं हो सकते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है, किन्तु क्या उसका अंतरराष्ट्रीय सुनिश्चित रूप कोई एक है? सच कहा जाय तो शायद नहीं। उच्चारण, शब्द-भंडार, अर्थ, रूप-रचना तथा वाक्य-रचना, इन सभी दृष्टियों से वह अनेकरूपता लिए हुए है।

इंग्लैंड अंग्रेज़ी का घर है। वहाँ की अंग्रेज़ी सभी दृष्टियों से एक प्रकार की है, जिसे 'किंग्स इंग्लिश' कहते हैं। अमेरिका अंग्रेज़ी का दूसरा घर है, किन्तु वर्तनी, उच्चारण, शब्द-भंडार, अर्थ, वाक्य-संरचना आदि दृष्टियों से अमरीकी अंग्रेज़ी ब्रिटिश अंग्रेज़ी से काफ़ी भिन्न है। यह बात दूसरी है कि ब्रिटिश अंग्रेज़ी अमेरिका में समझ ली जाती है।

अंग्रेज़ी ब्रिटेन और अमेरिका में समझने के अतिरिक्त एशिया तथा अफ्रीका के कई देशों, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया आदि में बोली जाती है तथा इन सभी की अंग्रेज़ी एक दूसरे से भिन्न तो है ही। ब्रिटिश और अमेरिकन अंग्रेज़ी पूरी तरह समान नहीं है। किसी भी अंतरराष्ट्रीय भाषा के स्वरूप में दो प्रकार के तत्व होते हैं। एक केंद्रीय तथा दूसरा परिधीय। केंद्रीय तत्व उस भाषा के सभी रूपों में समान होते हैं। इन्हीं के आधार पर उस भाषा के रूप का प्रयोक्ता दूसरे रूप के प्रयोक्ता को समझ अवश्य लेता है, चाहे वह उस मानक रूप में बोल भले न सके। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अंग्रेज़ी भाषा की संरचना में जो केंद्रीय तत्व है वह ब्रिटिश अंग्रेज़ी, अमरीकी अंग्रेज़ी, तथा आस्ट्रेलियाई अंग्रेज़ी आदि के सभी रूपों में समान है और उन्हीं के आधार पर वह अंतरराष्ट्रीय भाषा बनी है तथा अंग्रेज़ी जाननेवाले चाहे किसी भी देश के क्यों न हों एक दूसरे को उसी आधार पर समझ लेते हैं।

इसी प्रकार भारत के हिंदी प्रदेशों में हिंदी के कई रूप प्रचलित हैं। हिंदी के ये सभी रूप मिलकर हिंदी भाषा की मुकम्मल तस्वीर बनाते हैं।

हिंदी का एक मानक रूप जो भारत के विश्वविद्यालयों तथा कुछ महानगरों में सुशिक्षित लोगों में प्रचलित है, जिसका विश्लेषण हिंदी व्याकरणों में मिलता है।

भारत में हिंदी के मुख्यतः दस रूप मिलते हैं जिनमें,

1- हरियाणवी क्षेत्र की हिंदी,
2- कौरवी क्षेत्र की हिंदी,
3- बुन्देली क्षेत्र की हिंदी,
4-ब्रज-कन्नौजी क्षेत्र की हिंदी,
5- अवधी बघेली क्षेत्र की हिंदी,
6- छत्तीसगढ़ क्षेत्र की हिंदी,
7- हिमालय क्षेत्र की हिंदी,
8- कुमायुनी-गढ़वाली क्षेत्र की हिंदी,
9- भोजपुरी क्षेत्र की हिंदी,
10- मैथिली तथा संबद्ध क्षेत्र की हिंदी आदि। इसके अतिरिक्त हिंदीतर प्रदेशों में भी हिंदी के कई रूप मिलते हैं जिनमें,

1- दक्खिनी हिंदी, जो मुख्यतः आन्ध्र और कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों में बोली जाती है। इसके दो मुख्य रूप हैं:

I - आन्ध्र की हिंदी,II- कर्नाटक की हिंदी आदि,

2- बम्बइया हिंदी जो मुंबई और अहमदाबाद में बोली जाती है,

3- कलकतिया हिंदी जो कोलकाता में बोली जाती है,-हिंदी का एक रूप जो पूरब के बड़े नगरों में प्रचलित है। शिलांग, मिज़ोरम ईटानगर आदि शहरों में प्रचलित है। इस प्रकार भारत की हिंदी बोलियों तथा हिंदीतर प्रदेशों में बोली जाने वाली हिंदी के विभिन्न रूप कुल मिलाकर हिंदी के अंतर्गत आते हैं।

अब हम विश्व के उन देशों के लोगों की हिंदी पर विचार करेंगे जो स्वंय हिंदी को सीखते, पढ़ते और पढ़ाते हैं इनके अंतर्गत रूस, चीन, जापान, इंग्लैंड, कोरिया, रोमानिया, इटली, जर्मनी, फ्रांस, कनाडा, नॉर्वे, स्वीडन, पोलैंड, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, मेक्सिको, अफगानिस्तान, आर्मेनिया, अज़रबैजान, तुर्की, तुर्केकिस्तान, बेल्जियम, बुल्गारिया, क्रोएशिया, हंगरी, स्लोवेनिया, स्पेन, आदि देश आते हैं। इतना ही नहीं, आई. सी. सी. आर. द्वारा भारत की ओर से विश्व के 73 देशों के साथ भारतीय सिनेमा, भारतीय संस्कृति, शान्ति अध्ययन, भारतीय साहित्य, और हिंदी भाषा को पढ़ाने के लिए एम. ओ. यू (मैमोरंडम ऑफ अण्डरस्टैंडिंग) हस्ताक्षरित किये जा चुके हैं। इन देशों में लोग हिंदी में विशेषज्ञता हासिल करने, भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने तथा भारत में भ्रमण आदि के उद्देश्य से हिंदी सीखते हैं. भारत से बाहर अमेरिका, इंग्लैंड तथा जर्मनी आदि प्रमुख देशों के विश्वविद्यालयों में एम. ए, पी-एच.डी तथा पोस्टडॉक्टोरट अध्ययन किए जाते हैं।

विश्व के कुछ देश, जहाँ प्रवासी भारतीय और भारतवंशी समुदाय बड़ी संख्या में निवास करते हैं, वे प्रवासी भारतीय कई पीढ़ियाँ गुज़रने के बाद भी अपनी मातृभाषा हिंदी को मानते हैं। वे स्वयं प्रेरित होकर हिंदी सीखते और सिखाते ही नहीं हैं, बल्कि वे हिंदी में रचनाएं भी करते हैं। उन देशों में फ़िजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, मॉरीशस, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया आदि देशों में हिंदी का रचना-संसार विपुल मात्रा में उपलब्ध हो रहा है। प्रवासी अपने विचारों का आदान-प्रदान अपनी भोजपुरी मिश्रित हिंदी में बड़े गर्व के साथ

करते हैं। इनमे से कुछ देशों में बोली जानेवाली हिंदी को नमूने के तौर पर प्रस्तुत करना बहुत आवश्यक है।

मॉरीशस हिंद महासागर का काफ़ी छोटा द्वीप है। इस देश की वर्ष 2000 में की गई जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या ग्यारह लाख अठहत्तर हज़ार चार सौ चौरासी है। जिसमे भारतीयों की संख्या दूसरों से अधिक है। यहाँ ग्यारह भाषाएँ बोली जाती हैं। भोजपुरी, खड़ी बोली हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगू, मराठी, गुजराती, चीनी, फ्रेंच, अंग्रेज़ी, तथा मिश्रित भाषा क्रियोल आदि। भारत के अतिरिक्त सभी देशों में बोली जानेवाली हिंदी की दृष्टि से मॉरीशस सबसे आगे है। यही वह देश है, जहाँ सबसे पहले हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति जागरुकता आई थी। ( मार्च 1909 में यहाँ से 'हिन्दुस्तानी' नामक पत्र निकला। इसके संपादक मणिलाल डॉक्टर थे)

<u>मॉरीशस:</u> मॉरीशस की हिंदी का नमूना प्रस्तुत है। मैंने स्वयं के प्रयास से अपने मॉरीशस के भाई-बंधुओं से बात करके इन वाक्यों को श्रजित किया है। यह एक प्रकार से भोजपुरी मिश्रित हिंदी का ही रूप है, जिसे यहाँ के लोग अपने व्यवहार के लिए एवं आपसी सम्प्रेषण के लिए दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं ।

तोर भाई का करता? (तुम्हारा भाई क्या करता है?)
तोर बहिन का करता?(तुम्हारी बहन क्या करती है?)
उ दूकान से एगो पुस्तक खरीदलक। (उसने दुकान से एक पुस्तक खरीदी)

इसी तरह कुछ वाक्य मॉरीशस की भोजपुरी में इस प्रकार कहे जा सकते हैं।

तोर भाय कोनची करेला? (तुम्हारा भाई क्या करता है?)
कोनची =क्या, करेला =करता है।
तोहर भाय कोनची करेलन? (तुम्हारा भाई क्या करता है?) सम्मान सूचक है।
हमर भाय दोक्तेर ह / हवन। (हमारा भाई डॉक्टर है) दोक्तेर=डॉक्टर, हवन=हैं
तोर बहिन कोनची करेला? (।तुम्हारी बहिन क्या करती है?)
तोर बहिन का करेला? (तुम्हारी बहिन क्या करती है?)
तोहर बहिन का करेलन? (तुम्हारी बहिन क्या करती हैं?) आदर सूचक है?
(तोर=तुम्हारा/आपका/आपकी, बहिन =बहन, कोनची =का, क्या, करेला=करती है, करेलन = करती हैं)
तू का खा हवे / तू कोनची खात हवे (तू कोनची = आदर सूचक) आप क्या खा रहे हैं।
बुतिक से एगो लिव किनलक। (बुतिक (फ्रेंच) = दूकान, लिव (फ्रेंच)= पुस्तक दूकान से पुस्तक खरीदी।
बुटिक से एगो पुस्तक किनलन ।
(किनलक=खरीदा , किनलन=आदर सूचक)

इतना ही नहीं महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, मॉरीशस में हिंदी अध्यापन करने से पूर्व मुझे अज़रबैजान यूनिवर्सिटी ऑफ़ लैंग्वेज, बाकू, अज़रबैजान (रूस गणराज्य का एक देश, अब एक स्वतंत्र देश) में हिंदी अध्यापन कार्य

का अनुभव है। उस विश्वविद्यालय में बी. ए. (चार वर्ष की थी) वहाँ पर कुल 30 छात्र हिंदी अध्ययन कार्य कर रहे थे, जिनमें से 04 छात्र अनुत्तीर्ण होने के कारण अध्ययन करने वालों की संख्या 26 रह गई थी। किन्तु AUL, Baku , Azerbaijan के छात्र हिंदी पढ़ने में रूचि लेते थे। वहां पर अजेरी भाषा बोली जाती थी। अजेरी भाषा पर पर्शियन भाषा अधिक प्रभाव है। उसके शब्द दर्जी, जवान, अनार, मुहब्बत जैसे बहुत से शब्दों का प्रयोग भारत में पहले से ही किया जाता है। इस कारण वहां के छात्रों को हिंदी भाषा और साहित्य पढ़ना सरल लगता है।

आज महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, मॉरीशस में जो विद्यार्थी हिंदी पढ़ रहे हैं, उन छात्रों की संख्या बी. ए. प्रथम वर्ष में 35, बी. ए. द्वतीय वर्ष में 48 बी. ए. तृतीय वर्ष में 48 है। इस प्रकार कुल छात्रों की संख्या 131 है तथा एम. ए प्रथम वर्ष में कुल छात्रों की संख्या 06 तथा एम. ए द्वतीय वर्ष में छात्रों की कुल संख्या 04 है. इस प्रकार बी. ए. तथा एम. ए में हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 141 है। विश्व के अन्य देशों की तुलना में मॉरीशस के विद्यार्थी अधिक परिश्रमी, लगनशील और हिन्दी भाषा के प्रति समर्पित हैं। हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति यहाँ के विद्यार्थियों में अदभुत लगन दिखायी देती है। इस प्रकार महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, मॉरीशस में हिंदी पढ़नेवाले छात्रों की कुल संख्या दुनिया के किसी भी देश में हिंदी पढ़नेवालों की संख्या से सर्वाधिक बनती है। दुनिया में मॉरिशस देश में हिंदी के सर्वाधिक हिंदी के दूत रहते हैं। इस देश में हिंदी पढ़ने वालों की संख्या भविष्य में बढ़ने के संकेत मिल रहे हैं। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इस देश में हिंदी पढ़ने और पढाने का कार्य सदियों तक निरंतर चलता रहेगा।

<u>फ़िजी</u>- दक्षिणी प्रशांत महासागर में स्थित छोटे बड़े अनेक द्वीपों का एक देश है, जहाँ के 55% पौने तीन लाख लोग हिंदी बोलते हैं। यहाँ पर पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बिहार के अधिकतर भोजपुरी भाषी लोग रहते हैं।
उदाहरणार्थ फीजी हिंदी - तुम तो कमाल के हिंदी जानो।

(मानक हिंदी- तुम तो कमाल की हिंदी जानते हो) एक वचन में - हम जात रहा। - बहुवचन में- हम लोग जात रहा।

फीजी हिंदी - दुई स्कूल पढ़े - दो स्कूल में पढ़ते हैं।फ़िजी हिंदी की शब्दावली अधिकांशतः भोजपुरी की है। उज्जर (उजाला), हरियर ( हरा), सोम्मर (सोमवार), मंगर (मंगलवार), हियाँ (यहाँ), हुवां (वहाँ), ई (यह), ऊ (वह), केरा ( केला)।

<u>सूरीनाम</u> - सूरीनाम दक्षिणी अमेरिका का एक छोटा-सा राज्य है। सूरीनाम में एक लाख पचास हज़ार से अधिक लोग हिंदी बोलते हैं। सूरीनाम के अन्य निवासियों में- डच, रेड-इंडियन, नीग्रो, पुर्तगाली तथा जापानी आदि लोग हैं। सूरीनाम में सरनामी हिंदी बोली जाती है। उसके कुछ

उदाहरण प्रस्तुत हैं।

| | |
|---|---|
| राम जाला. | (राम जाता है) |
| राम जात बा | (राम जा रहा है) |
| राम गईल | (राम गया) |
| राम जाई | (राम जाएगा) |
| तोहरा हियाँ आबे | (तुम्हारे यहाँ आऊँगा) |

कुछ शब्दावली भी प्रस्तुत है- मूड़ी (सिर), गोड (पैर), ठेगुना (घुटना), मोंछ (मूँछ), माठा (मट्ठा), गुलगुला (पुआ), खरहा (खरगोश), हरना (हिरन), फगुवा (होली), दियादिवारी (दीपावली), लहंगा, ओढ़नी, पैजामा (पैंट), सोंठ ( कमीज़, शर्ट के विकसित रूप)

<u>दक्षिण अफ्रीका</u>- दक्षिणी अफ्रीका में भी हिंदी भाषी हैं, जिनकी संख्या एक लाख से अधिक है। ये लोग भोजपुरी प्रदेश के हैं और भोजपुरी प्रभावित हिंदी बोलते हैं । जैसे-

तू वारी नहीं करना ( तू चिंता मत करना.)

तू प्लीज होकर ई काम करना। ( तू कृपया यह काम करना।)

ई बच्चा मस्ती कर रहा है। ( यह बच्चा शैतानी कर रहा है।)

इन देशों में बोली जानेवाली हिंदी में भिन्नता है, परन्तु फिर भी हम उन प्रवासी भारतीयों की हिंदी समझ लेते हैं।

विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यूयॉर्क में भारत के एक व्यक्ति ने अमेरिका में बसे एक प्रवासी व्यक्ति से पूछा ! अमेरिका में हिंदी की क्या ज़रूरत है, जब भारत के कुछ भागों में ही उसके लिए अधिक उत्साह नहीं"। प्रवासी भारतीय का उत्तर था- "मेरे अपने विचार से अमेरिका के प्रवासी भारतीय को हिंदी की जितनी ज़रूरत है, उतनी शायद भारतवासी भारतीयों को भी नहीं, क्योंकि अमेरिका के भारतीय हिंदी भूल जायेंगे तो रामचरितमानस भूल जायेंगे, प्रार्थनाएँ भूल जायेंगे, ताजमहल भूल जायेंगे, वहाँ की संस्कृति भूल जायेंगे जो हज़ारों वर्षों से दुनियां का पथ प्रदर्शन करती रही है।"

अंत में मुझे यह कहने में बिल्कुल हिचक नहीं है कि किसी भी भाषा का कार्यान्वयन केवल अनुदेशों और संसाधनों से ही नहीं होता है बल्कि उसके लिए संकल्पनिष्ठा की भी ज़रूरत होती है। भावनात्मक एकता के लिए 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना होना नितांत आवश्यक है। भारत के लिए आप्रवासी भारतीयों की हिंदी, साहित्य के साथ-साथ भारत तथा विश्व के अनेक देशों के करोड़ों भारतीयों के हृदयों को जोड़नेवाली ऊर्जा भी है और प्रेम की गंगा भी है।मेरा अपना सपना है और मेरे देश के करोड़ों भारतवासियों का सपना है कि विश्व में हिंदी भाषा संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्य भाषा बने. इससे भारतीय भाषा और संस्कृति का झंडा विश्व में अनंतकाल तक लहराए ।

**डॉ. उमेश कुमार सिंह,**
**हिंदीपीठ / हिंदी चेयर,**
**हिंदी विभाग,**
**भारतीय भाषा अध्ययन संकाय**
**महात्मा गाँधी संस्थान**
**मोका, मॉरिशस**

**E-mail: umesh_jnu@rediffmail.com**
**Mobile: +23022776,**

PDF Created Using

Camera Scanner

Easily Scan documents & Generate PDF

https://play.google.com/store/apps/details?id=photo.pdf.maker